स्वाध्याय

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) साधु कैसा होना चाहिए?

उत्तर : साधु सूप जैसे स्वभाववाला होना चाहिए। सूप फटकते समय अच्छे अनाज को अपने पास रख लेता है और कचरे को बाहर फेंक देता है। उसी तरह साधु को सारयुक्त वस्तु ग्रहण करनी चाहिए और निस्सार वस्तु छोड़ देनी चाहिए।

(2) कबीरजी लालच को क्यों बुरी चीज कहते हैं?

उत्तर : लालच व्यक्ति की बुद्धि और उसके विवेक को नष्ट कर देता है। मक्खी लालच के कारण गुड़ पर बैठती है और उसमें फंस जाती है। फिर वह पछताती है, पर उसमें से निकल नहीं पाती। उसी तरह जो व्यक्ति लालच में पड़ता है, वह अंत में पछताता है। इसलिए कबीरजी लालच को बुरी चीज कहते हैं।

(3) तुलसीदासजी सबसे हिल-मिलकर रहने के लिए क्यों कहते हैं?

उत्तर : हिल-मिलकर रहने से आपस में प्रेमभाव बढ़ता है। किसीसे वैर-विरोध नहीं होता। सब एक-दूसरे को सहयोग देते हैं। तुलसीदासजी इसीलिए नदी और नाव के संयोग की तरह सबसे हिल-मिलकर रहने के लिए कहते हैं।

(4) गरीब की हाय' के लिए कौन-सा उदाहरण दिया गया है?

उत्तर : 'गरीब की हाय' के लिए लुहार की धौंकनी का उदाहरण दिया गया है। धौंकनी मरे हुए जानवर के चमड़े से बनती है। धौंकनी से निकली हुई हवा आग को तेज करती है। उससे लोहा भी भस्म हो जाता है गरीब की हाय धौंकनी से निकली हुई हवा की तरह होती है। वह दुआ बनकर हमारा सर्वनाश कर देती है।

(5) रहीम प्रेम का धागा तोड़ने से क्यों मना करते हैं?

उत्तर : प्रेम का धागा बहुत नाजुक होता है। उसे खींचने से वह टूट जाता है। धागा एक बार टूट जाने पर फिर वह जुड़ता नहीं। अगर जुड़ता भी है तो उसमें गांठ पड़ जाती है। उसमें पहले जैसे संबंध की मधुरता नहीं रहती। इसलिए रहीम प्रेम का धागा टूट न जाए, इसका ध्यान रखने के लिए कहते हैं।